CBSE Class 8 Maths Notes Chapter 1 परिमेय संख्याएँ

→ प्राकृत संख्याएँ-गिनती की संख्याएँ 1, 2, 3, 4..... प्राकृत संख्याएँ कहलाती हैं।

→ पूर्ण संख्याएँ-सभी प्राकृत संख्याओं के साथ 0 अर्थात् 0, 1, 2, 3, 4, ... पूर्ण संख्याएँ कहलाती हैं।

→ पूर्णांक-पूर्ण संख्याओं के साथ ऋणात्मक चिह्न वाली गिनती की संख्याएँ ..., -3, -2, -1, 0, 1, 2, 3.... . पूर्णांक कहलाती हैं।

→ परिमेय संख्याएँ-ऐसी संख्या परिमेय संख्या कहलाती है जिसे pqpq के रूप में लिखा जा सकता हो, जहाँ p और q पूर्णांक हैं तथा $q \neq 0$ है।

→ परिमेय संख्याएँ योग, व्यवकलन (बाकी) तथा गुणन की संक्रियाओं के अन्तर्गत संवृत्त हैं। (6) परिमेय संख्याओं के लिए योग की संक्रिया क्रम विनिमेय है अर्थात् a तथा b के लिए a + b = b + al

→ परिमेय संख्याओं के लिए गुणन क्रम विनिमेय है अर्थात् a तथा b के लिए ax b = bx al

→ परिमेय संख्याओं के लिए योग संक्रिया साहचर्य है अर्थात् तीन परिमेय संख्याओं a, b तथा c के लिए $a + (b + c) = (a + b) + c$ ।

→ परिमेय संख्याओं के लिए गुणन संक्रिया साहचर्य है अर्थात् किन्हीं तीन परिमेय संख्याओं a, b तथा c के लिए $a \times (b \times c) = (a \times b) \times c$ ।

→ परिमेय संख्याओं के लिए परिमेय संख्या शून्य एक योज्य तत्समक है अर्थात् किसी परिमेय संख्या में शून्य | जोड़ने पर योग वही परिमेय संख्या होगी।

→ परिमेय संख्याओं के लिए परिमेय संख्या 1 गुणनात्मक तत्समक है अर्थात् किसी परिमेय संख्या को 1 से गुणा करने पर वही संख्या गुणनफल के रूप में प्राप्त होगी।

→ किसी परिमेय संख्या abab का योज्य प्रतिलोम -abab है तथा -abab का योज्य प्रतिलोम । है।

→ यदि ab×cdab×cd = 1 तो परिमेय संख्या १ का व्युत्क्रम अथवा गुणनात्मक प्रतिलोम में है।

→ शून्य का कोई व्युत्क्रम नहीं है।

→ परिमेय संख्याओं के योग एवं व्यवकलन पर गुणन की वितरकता सभी परिमेय संख्याओं a, b और c के लिए

- $a (b + c) = ab + ac$
- $a (b - c) = ab - ac$

→ परिमेय संख्याओं को संख्या रेखा पर निरूपित किया जा सकता है।

→ दो दी हुई परिमेय संख्याओं के बीच अपरिमित परिमेय संख्याएँ होती हैं।

→ दो परिमेय संख्याओं a तथा b के बीच की परिमेय संख्या 4th होगी।

https://www.evidyarthi.in/